① Q. राजपूतों की स्थिति या उत्पत्ति का वर्णन करें।

उत्तर → राजपूत कौन थे ? इतिहासकारों में राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न अभी तक विवादास्पद बना हुआ है। अभिलेखों, प्रशस्ति लेखों और अनुश्रुतियों में राजपूतों को वैदिक आर्यों से सम्बंधित उच्च कुल का क्षत्रिय कहा गया है। लेकिन कुछ यूरोपीय इतिहासकार राजपूत को विदेशी जातियों की सन्तान मानते हैं। इस संबंध में वास्तविकता क्या है? इसे जानने के लिए राजपूत शब्द की उत्पत्ति पर प्रकाश डालना होगा।

राजपूत शब्द का अर्थ - "राजपूत"

संस्कृत भाषा में एक शब्द है जिसका विकृत रूप राजपूत है। राजपूत शब्द का प्रयोग प्राचीन काल में राजवंशियों, राजकुमारों और राजपूतों के लिए किया जाता था। इतिहास में द्रौपदी को भी राजपुत्री और क्षत्राणी कहा गया है। इसी तरह से 7 वीं सदी में प्रसिद्ध विद्वान भवभूति ने कौशल्या को और बाण ने 'हर्ष-चरित' नामक पुस्तक में हर्षवर्द्धन को क्रमशः राजपुत्री और राजपुत्र कहा है। पुराण में कई जगह राजपूत शब्द का वर्णन मिलता है। भारत पर मुसलमानों के आक्रमण के समय से राजपुत्र शब्द के स्थान पर राजपूत शब्द का प्रयोग होने लगा, क्योंकि राजपुत्र के उच्चारण में थोड़ी कठिनाई होती थी। इसलिए सरलता के लिए राजपूत शब्द का प्रयोग लड़ाकू जाति और क्षत्रीय के लिए किया जाने लगा।

कुछ इतिहासकार राजपूतों को अग्नि-कुण्ड में उत्पन्न मानते हैं, जिसकी कहानी संक्षेप में इस प्रकार है। प्रसिद्ध विद्वान चन्दवरदायी के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति अग्नि-कुण्ड से हुई है। कहा जाता है कि जब पृथ्वी पर राक्षसों और मलेच्छों का उपद्रव बहुत बढ़ गया था, तो आबू नामक पर्वत पर वशिष्ट मुनि ने अग्नि-कुण्ड से क्रमशः चार योद्धाओं को पैदा किया था। जिनमें परमार, चालुक्य, प्रतिहार मुख्य हैं। लेकिन इन तीनों में से कोई राक्षसों तथा मलेच्छों को नष्ट नहीं कर सका। अतः उसने चाहमान को उत्पन्न....

Scanned with CamScanner

(2) किया था, लेकिन बहुत से इतिहासकार चन्दवरदायी की इस कहानी को काल्पनिक मानते हैं, जिसमें डा० ईश्वरी प्रसाद का नाम अग्रगण्य है। इस संबंध में उनका कथन है कि "पृथ्वीराजरासो में अनेक कपोल कल्पित कहानियाँ हैं, जिनको ऐतिहासिक मानना हमारी अज्ञानता का परिचायक होगा।"

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि राजपूत सीथियन या शकों के वंशज थे। इस मत का समर्थन प्रसिद्ध इतिहासकार टाड और विलियम बुक ने किया है। उनका कथन है कि राजपूतों का उद्भव कुषाण-आक्रमणों के समय हुआ था। अतः गुर्जरों के प्रमुख से राजपूतों के कुल की उत्पत्ति हुई थी।

डॉ० वी० स्मिथ का कथन है कि - चंदेलों, राठौरों और गहरवालों की उत्पत्ति गोल्ड, भार और खर्बो से हुई थी, जो विदेशी थे।"

लेकिन डॉ० भण्डारकर ने प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहान चारों को अग्निकुलों का गुर्जर सिद्ध करने की कोशिश की है। वैद्य महोदय ने उनको गुर्जर बतलाया है। उपर्युक्त तर्कों के बताकर आर्यो की सन्तान बतलाया है। उपर्युक्त तर्कों के बाद हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि राजपूत प्राचीन क्षत्रियों की संतान है।

राजपूतों की सभ्यता तथा संस्कृति के निम्नलिखित तत्व अत्यधिक प्रमुख है -

(1) सामाजिक दशा → राजपूतकालीन समाज में चारों वर्ण के लोग थे, जिनमें राजपूतों को विशेष सम्मान प्राप्त था, क्योंकि ये लोग क्षत्रीय कहलाते थे और लड़ाई-भिड़ाई में भाग लिया करते थे। ठीक इसी तरह कायस्थ नामक जाति का उदय होना शुरू हुआ। लिखने-पढ़ने का कार्य करने वालों को कायस्थ कहा जाने लगा था। शूद्रों की अनेक जातियों का निर्माण भी होना आरंभ हो गया था। अतः समाज की स्थिति अच्छी थी।

Scanned with CamScanner

(3)

③ स्त्रियों की दशा :→ प्राचीन काल के सामाजिक नियम पहले की तरह ही प्रचलित थे, लेकिन समाज में अनेक उपजातियों का उदय हो रहा था। संकीर्णता और पार्थक्य का भावना बलवती हो रही थी। फलतः समाज में ऊँच-नीच का भेद था। विवाह अधिकतर अपनी ही जाति में हुआ करता था। उस समय के समाज में बहु विवाह की भी प्रथा थी। जौहर और सती प्रथा समाज में खूब जोरों पर थी। राजाओं के स्वयंवर का रिवाज था। उच्च कुल की स्त्रियाँ शिक्षित हुआ करती थी। औरतों में पुरुषों की भाँति वीरता और आत्म सम्मान की भावना अधिक थी। स्त्रियों में पर्दे की प्रथा नहीं थी।

③ जातिगत गुण → राजपूत लोग बड़े वीर और साहसी होते थे। विपत्तियों से खेलना उनके लिए आम बात थी। उसमें स्वतंत्रता और स्वाभिमान की अटूट भावना थी। देशभक्ति की भावना तो उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। महाराणा प्रताप इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। अतः राजपूत लोग अपनी मान-मर्यादा और देश की रक्षा के लिए हमेशा प्रस्तुत रहा करते थे।

④ सामाजिक कुरीतियाँ → उपर्युक्त गुणों के बाद भी राजपूतों में कुछ सामाजिक बुराईयाँ तथा कुरीतियाँ भी थी। वे स्वभाव से अहंकारी तथा दम्भी होते थे। आपसी द्वेष की भावना तो उनमें बहुत अधिक थी। समाज में सती प्रथा, बाल विवाह और जौहर लेने की कुप्रथाएँ थी जिससे समाज आक्रान्त था। राजपूतों के स्वभाव के बारे में अरब के प्रसिद्ध विद्वान अलबरूणी ने लिखा है कि "राजपूत बड़े अहंकारी, दम्भी, स्वाभिमानी और हठी थे, वे अपना स्थान भी दूसरे को नहीं देते थे।"

⑤ भोजन → राजपूतकालीन अभिलेखों और पुस्तकों के अध्ययन करने से हमें यह ज्ञात होता है कि राजपूत लोग उस काल में गेहूँ, चावल और फल का प्रयोग प्रचुर मात्रा में करते थे।

Scanned with CamScanner

(4) मांस, मछली, दूध, दही, घी और अण्डे भी खूब खाते थे। अल्हण-देवी के अभिलेख से यह मालूम होता है कि ब्राह्मण भी मांस खाते थे, क्षत्रिय मांस के साथ शराब भी पीते थे, परन्तु ब्राह्मण लोग शराब नहीं पीते थे।

(6) वस्त्र → राजपूतकालीन स्त्रियाँ अपने अंगो को पूर्ण रूपेण ढ़ँकने लगी थी। स्त्रियाँ श्रृंगार भी करती थी। मूर्तियों पर अंकित अलंकार उस काल की अलंकार प्रियता को प्रकट करते हैं।

(7) मनोरंजन के साधन → उन लोगों के मन बहलाव के बहुत से साधन थे। उनमें शतरंज का खेल अत्यधिक प्रचलित था। संगीत से लोगों को विशेष दिलचस्पी थी। लोग नाच गाकर भी मन बहलाव कर लिया करते थे। विशेष अवसरों पर नृत्य का आयोजन होता था। शिकार खेलना भी मन बहलाव का एक साधन था।

(8) धार्मिक दशा :→ धार्मिक दशा उस काल में ब्राह्मण-धर्म का पुनरुत्थान हो रहा था। मलीकर महोदय के मतानुसार ब्राह्मण धर्म अपने उत्कर्ष पर था। राजपूत राजे अधिकतर ब्राह्मण धर्म के पोषक थे।

इस काल में शैव-धर्म की भी खूब उन्नति हुई थी। चेदी, चोल और पाल नरेशों के लेखों में "ॐ नमः शिवाय" का प्रयोग खुब हुआ है। इससे यह ज्ञात होता है कि उस काल में शैव धर्म का भी बोल-बाला था। पाल राजाओं ने पाशुपत सम्प्रदाय को विशेष प्रोत्साहन दिया था।

Dr. Digambar Jha
Dept of History
Paper - I (Hons.)
S.R.A.P. College Bara Chakiya

Scanned with CamScanner